thearyasamaj.org

आर.एन.आई. रजि० नं० HRHIN/2003/10425
डाक पंजीकरण संख्या : P/RTK/10/2013-15

सृष्टि संवत् 1960853115
विक्रम संवत् 2071
दयानन्दाब्द 191

॥ ओ३म् ॥

आर्य प्रतिनिधि

आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा का साप्ताहिक मुखपत्र

E-mail : aryapsharyana@gmail.com दूरभाष : 01262-216222 सम्पादक : मा० रामपाल आर्य

विदेश में वार्षिक शुल्क : 75 डॉलर विदेश में आजीवन शुल्क : 300 डॉलर

वर्ष : 11 अंक : 32 रोहतक, 21 जनवरी, 2015 वार्षिक शुल्क : 150/- आजीवन 1500/-

ईश्वर सर्वज्ञ है और जीवात्मा अल्पज्ञ है

❑ मनमोहन कुमार आर्य

आजकल मनुष्य का जीवन इतना व्यस्त हो गया है कि स्वाध्याय के लिए समय मिलना कठिन हो गया है। कई दैनिक कर्तव्य मनुष्य चाहकर भी पूरे नहीं कर पाता है। ऐसी स्थिति मे ईश्वर क्या है, कैसा है तथा जीवात्मा का स्वरूप कैसा है, इसको जानने की किसी को न इच्छा होती है न फुर्सत ही है। इसके दूसरी ओर हमारे ग्रामीण, अशिक्षित व अल्प शिक्षित व नगरीय बन्धुओं में भी धार्मिक भावनाओं की भूख भरी पड़ी है जिस कारण कुछ चालाक व कपटी लोग उन्हें अपना शिष्य या अनुयायी बना लेते हैं। वहां गुरुओं द्वारा उन्हें अपने गुरु में अन्ध-श्रद्धा रखना सिखाया जाता है और हमें लगता है कि उनके सत्संगों में जाना और वो जो कहें उसे सुनना ही उनका धर्म बन जाता है। मैं कौन हूं ?

इस प्रश्न का शास्त्रीय व सही उत्तर उन्हें वर्षों तक गुरुओं की सेवा सुश्रुषा करने पर भी नहीं मिलता है। यह बात और है कि यह उत्तर कठिन नहीं अपितु सरल है, परन्तु सत्य ज्ञान देने से आजकल के गुरुओं का छद्म प्रयोजन पूरा नहीं होता। यहां इतना कहना ही अभीष्ट है कि हम और सभी प्राणी एक जीवात्मा हैं जो अति सूक्ष्म चेतन तत्व हैं। यह जीवात्मा अनादि, अनुत्पन्न, अविनाशी अमर, कर्मानुसार नाना योनियों में जन्म लेने वाला, कर्मानुसार सुख व दुःख का उपभोग करने वाला तथा वेदानुसार सद्कर्मों वा सद्धर्म का पालन कर धर्म, अर्थ, काम व मोक्ष को सिद्ध कर 31 नील 10 खरब 40 अरब वर्षों का मुक्ति का सुख भोगने वाला है। हमें अपने जीवन से जुड़े सभी आध्यात्मिक व सामाजिक प्रश्नों का उत्तर महर्षि दयानन्दकृत सत्यार्थ प्रकाश ग्रन्थ से मिल सकता है।

आज के इस लेख में हम ईश्वर के एक गुण, सर्वज्ञता पर विचार कर रहे हैं। सर्वज्ञ का अर्थ है कि सब कुछ जानने वाला। ईश्वर के इस गुण व इसके साथ अन्य कुछ गुण व शक्तियों के कारण ही वह इस संसार को बनाता, चलाता, प्रलय करता और पुनः सृष्टि की रचना करता है। यदि ईश्वर में सर्वज्ञता का गुण न होता तो यह संसार बन ही नहीं सकता था। हमारे वैज्ञानिक छोटे से छोटा आविष्कार करते हैं तो उसमें बौद्धिक ज्ञान की आवश्यकता पड़ती है। उस ज्ञान को बहुत से शिक्षित लोग भी जान व समझ नहीं पाते। हम लोग तो बिना सिखाये उन आविष्कृत वस्तुओं का प्रयोग भी नहीं कर पाते। जिस प्रकार एक साइकिल तक चलाने के लिए कई बार अभ्यास करना पड़ता है और उसको चलाना सिखना पड़ता है, उसी प्रकार से ईश्वर भी वैज्ञानिकों की भांति अपने सर्वज्ञ ज्ञान से इस संसार की रचना करता है। ईश्वर के ज्ञान की यदि बात करें तो संसार के सभी वैज्ञानिक मिल कर भी इतना ज्ञान नहीं रखते जितना ईश्वर अकेला रखता है। यही कारण है कि वैज्ञानिकों ने कृत्रिम पदार्थ तो अनेक बना लिये हैं परन्तु मनुष्य के शिर का बाल या एक नाखून तक का वह आविष्कार नहीं कर सके जो ईश्वर के बनाये बाल व नाखून के पूरी तरह से समान हो। इस 'सर्वज्ञ' ज्ञान होने के कारण ईश्वर ने सूर्य, चन्द्र, पृथिवी, पृथिवीस्थ सभी पदार्थ, मनुष्यों व इतर प्राणियों के शरीर आदि बनाये हैं और सर्वज्ञता के ज्ञान से ही वह सारे संसार का संचालन आदर्श रूप में कर रहा है। ईश्वर सर्वज्ञ होने से सृष्टि के बारे में हर प्रकार का ज्ञान रखता है और इसके अतिरिक्त अपनी सर्वव्यापकता, अनादिता, नित्यता, सर्वशक्तिमानत्व, आनन्दस्वरूप होने के कारण वह सत्व, रज व तम गुणों वाली सूक्ष्म जड़ कारण रूप प्रकृति से सृष्टि को बनाता है। अतः ईश्वर की सर्वज्ञता उसके सर्वव्यापकत्व के गुण पर भी मुख्यतः निर्भर है। यदि वह सर्वव्यापक न होता तो वह सर्वज्ञ कदापि नहीं हो सकता था। क्योंकि एकदेशी अर्थात् एक स्थान पर रहने वाली सत्ता को अपने अन्दर व इर्द-गिर्द का भी ज्ञान होना ही सम्भव है, अपने से दूर व सुदूरस्थ स्थानों का ज्ञान नहीं हो सकता। इसको इस प्रकार से भी समझ सकते हैं कि हमें नेत्र इन्द्रियां से वस्तुओं का दर्शन होता है। नेत्र हमारे शिर में सामने की ओर हैं। अतः हम आगे कुछ दूर की वस्तुओं को ही देख सकते हैं, बहुत दूर व अनन्त दूरी पर स्थित वस्तुओं को नहीं। हम बिना घूमें अपने पीछे की पास की वस्तुओं को भी नहीं देख पाते। एकदेशी जीवात्मा का यह ज्ञान अल्पज्ञ कहलता है। मनुष्य का जीवात्मा एकदेशी है, अतः इसका ज्ञान भी सर्वज्ञ न होकर अल्पज्ञ है। अपने अल्पज्ञ ज्ञान को वह ईश्वरोपासना, वेदादि शास्त्रों का अध्ययन, माता-पिता-आचार्य व समाज के ज्ञानी पुरुषों की संगति कर अपने ज्ञान में वृद्धि कर सकता है परन्तु यह ज्ञान वृद्धि एक सीमा तक ही होती है। सर्वज्ञता की स्थिति जो ईश्वर को प्राप्त है, वह स्थिति जीवात्मा को कभी भी प्राप्त नहीं हो सकती।

मनमोहन कुमार आर्य

इस लेख में हमने यह जाना है कि ईश्वर के अनन्त गुणों में से एक गुण है 'सर्वज्ञता'। जीवात्माओं में यह गुण ईश्वर से अतिन्यून 'अल्पज्ञता' के रूप में विद्यमान है। ईश्वर के इस गुण में उसका सर्वव्यापक होना भी एक महत्वपूर्ण कारण है। यदि ईश्वर सर्वव्यापक न होता तो उसमें यह गुण नहीं हो सकता था। यह भी महत्वपूर्ण तथ्य है कि ईश्वर का यह गुण अनादि व नित्य है और हमेशा-हमेशा उसके साथ रहेगा। यह ईश्वर का स्वाभाविक गुण है। स्वाभाविक गुण हमेशा अपने गुणी के साथ रहते हैं। ईश्वर यदि चाहे भी तो इसका त्याग नहीं कर सकता। यद्यपि यह प्रश्न निरर्थक है कि क्या कभी ईश्वर ऐसा चाह सकता है। ईश्वर की उपासना में इस गुण 'सर्वज्ञता' का चिन्तन करने से उपासक को लाभ मिलता है। उपासना में ईश्वर से संगति होती है और सर्वज्ञता का चिन्तन करने से जीवात्मा की अल्पज्ञता में गुण-वर्धन होता है। यह गुण वर्धन यहां तक होता है कि वह ईश्वर के सत्य स्वरूप को जानकर उसमें स्थित व स्थिर हो जाता है। यह स्थिति सिद्ध योगियों को ही प्राप्त होती है। इसका अभ्यास कोई साधारण से साधारण मनुष्य भी कर सकता है। हमारे गुरुकुलों व आर्यसमाजों में उपासना सिखाई जाती है। महर्षि दयानन्द ने इसके लिए उपासना विषय पर "सन्ध्या पद्धति" नाम की पुस्तक भी लिखी है। उसको पढ़कर उपासना के क्षेत्र में प्रवृत्त हुआ जा सकता है। उपासना में नैरन्तर्यता से ध्यान स्थिर होता है और ध्यान की स्थिरता से वह स्थिति प्राप्त होती है जो जीवन का लक्ष्य है। इस स्थिति को समाधि कहा जाता है। समाधि में ईश्वर जीवात्मा या उपासक अथवा योगी को अपने सत्य स्वरूप का निर्भ्रान्त ज्ञान कराता है जिससे योगियों के सभी संशयों की निवृत्ति हो जाती है। ईश्वर के स्वरूप का यह प्रकाश कुछ इसी प्रकार का होता है जिस प्रकार से एक स्त्री अपने स्वरूप का प्रकाश अपने पति के सम्मुख करती है। समाधि में होने वाला

शेष पृष्ठ 7 पर....

thearyasamaj.org

सच्चे हिंदुत्व को दिखाती है 'पीके'

❑ डॉ. वेदप्रताप वैदिक

हमारे देश में आजकल हंसी-मजाक का दोहरा नाटक चल रहा है। एक नाटक सिनेमाघरों के अंदर चल रहा है और दूसरा उनके बाहर! सिनेमाघरों में फिल्म 'पीके' चल रही है और सिनेमा घरों के बाहर फिल्म 'बिना देखे' चल रही है। जो लोग इस फिल्म का विरोध कर रहे हैं, उनसे पूछिए कि आपने वह फिल्म देखी है? तो मालूम पड़ा कि वे उसका विरोध उसे देखे बिना ही कर रहे हैं? क्यों कर रहे हैं? क्योंकि उनके एक साथी ने उन्हें कहा है कि उसमें हिंदू देवी-देवताओं का अपमान किया गया है। यह बात मुझे भी चुभी। जब चार-पांच दिन पहले कुछ टीवी रिपोर्टरों ने मुझे घेरा और कहा कि आप 'पीके' पर अपनी प्रतिक्रिया दीजिए तो मैंने कहा कि जब तक मैं उसे देख न लूं, उस पर प्रतिक्रिया कैसे दूं? उन्होंने कहा कि लालकृष्ण आडवाणी ने उसकी भरपूर प्रशंसा की है। मैंने कहा कि आडवाणी जी का मैं बहुत सम्मान करता हूं, लेकिन फिल्म देखने पर ही मैं अपनी राय प्रकट करूंगा।

सो, कई बरसों बाद सिनेमाघर में जाकर मैंने फिल्म देखी। मुझे लग रहा था कि हॉल खाली होगा। दर्शकों को डर लगेगा कि वे दंगाइयों के बीच जाकर इस फिल्म को क्यों देखें, लेकिन मैंने देखा कि मेरे आगे-पीछे और आस-पास की सभी सीटें खचाखच भरी हुई थीं और फिल्म के दौरान दर्शकगण कभी ठहाके लगाते थे और कभी तालियां बजाते थे। यदि यह फिल्म हिंदू देवी-देवताओं का अपमान कर रही होती तो इतने लोग इसे देखने क्यों जाते और वहां जाकर तालियां क्यों बजाते? इस फिल्म को देखने वालों में 90-95 प्रतिशत तो हिंदू ही हैं। फिल्म देखकर पहली प्रतिक्रिया मेरे मन में यह हुई कि जो लोग इसका विरोध कर रहे हैं, सबसे पहले उनको यह फिल्म अपनी आंखों से देखनी चाहिए और इसके बारे में अपने विवेक से राय बनानी चाहिए। यदि वे स्वयं इसे देख लेंगे तो मैं सोचता हूं कि उनकी राय तो बदल ही जाएगी, वे इस फिल्म के दृश्यों और संवादों को सुनकर लोट-पोट हो जाएंगे।

इस फिल्म में न तो ईश्वर के अस्तित्व को चुनौती दी गई है और न ही किसी तरह का आरोप लगाया गया है। इसमें हिंदू धर्म के नाम पर चल रहे पाखंड को खंड-खंड किया गया है। इस फिल्म ने वही दिखाया है, जो कभी गुरु नानक ने कहा था, जो कभी महर्षि दयानंद ने हुंकार भरी थी, जिसकी तरफ विवेकानंद ने इशारा किया था और संत कबीर के दोहों ने जिस पाखंड को चूर-चूर कर दिया था। इस फिल्म में 'तपस्वी बाबा' नामक एक पाखंडी अपने चेलों की ईश्वर से फोन पर बात करवाता है और उनसे पैसे बटोरता है। जब कोई चेला उससे टेड़ा सवाल पूछता है तो उसके मैनेजर सारे नाटक पर पर्दा डाल देते हैं। वह भविष्यवाणियां करता है, लोगों की बीमारियों के इलाज बताता है, लोगों को ईश्वर साक्षात्कार करवाता है।

फिल्म की पटकथा लिखने वाले अमिताभ जोशी ने इतने प्रभावशाली ढंग से इस ढोंगी बाबा के संवाद लिखे हैं कि दर्शकों तक को उस पर विश्वास होने लगता है, लेकिन किसी आसमानी उपग्रह से पृथ्वी पर आए हुए 'पीके' नामक पात्र ने उस बाबा की पोल अपने इतने भोले सवालों से उजागर कर दी कि दर्शकगण लोट-पोट तो हो ही जाते हैं, 'बाबाओं' की चालाकी देखकर हतप्रभ भी रह जाते हैं। इस फिल्म को देखकर उन कुख्यात 'बाबाओं' की याद ताजा हो जाती है, जो आजकल जेल की हवा खा रहे हैं। किसे पता है कि इन दुराचारी 'बाबाओं' के कुकृत्यों ने ही राजकुमार हीरानी को यह फिल्म बनाने के लिए प्रेरित किया हो। इस फिल्म में अपने देश के किसी महान जीवंत या दिवंगत संत के लिए कोई ऐसी बात नहीं कही गई है कि जिसे हम आपत्तिजनक कह सकें।

सच पूछा जाए तो यह फिल्म सच्चे हिंदुत्व का प्रतिपादन करती है और छद्म हिंदुत्व को ध्वस्त करती है। सच्चा हिंदुत्व तर्क पर आधारित है, अंध-श्रद्धा पर नहीं। यह देवी-देवताओं के विरुद्ध नहीं, यह ढोंगी बाबाओं के विरुद्ध है। उन बाबाओं के विरुद्ध है जिनके कुकृत्यों से हिंदू धर्म जैसा महान धर्म बदनाम होता है। अंध-श्रद्धा के विरुद्ध महर्षि दयानंद ने हरिद्वार के कुंभ में लगभग डेढ़ सौ साल पहले पाखंड खंडिनी पताका लहराई थी। पाखंड खंडन का अंग्रेजी संक्षेप क्या होगा, वही जो इस फिल्म का नाम है- पीके। यह फिल्म कबीर और दयानंद जैसे निर्भीक समाज-सुधारकों के विचारों को मूर्त रूप प्रदान करती है। यह ईश्वर के प्रति सच्ची श्रद्धा को प्रगाढ़ बनाती है। इस फिल्म का मुख्य नायक आमिर खान (पीके) अंत में कहता है, जो फिल्म का सर्वोच्च संदेश है कि ईश्वर में होने वाली श्रद्धा मनुष्यों में आशा और विश्वास का संचार करती है, लेकिन जो कई नकली ईश्वर ढोंगी बाबाओं, मुल्लों और पादरियों ने खड़े कर दिए हैं, वे धर्म के नाम पर चलने वाली दुकाने हैं। वह धर्म नहीं है। वह धर्म का धंधा है।

यह धंधा सिर्फ हिंदुओं के बीच ही नहीं, मुसलमानों, इसाईयों और सिखों के बीच भी जोरों से चल रहा है। इस फिल्म में ऐसे अनेक दृश्य हैं, जिनमें इस्लाम, ईसाइयत और अन्य कई संप्रदायों में चल रहे पाखंडों पर तीखे सवाल उठाए गए हैं। इस्लाम के नाम पर होनेवाले आतंकवाद और स्त्री-शिक्षा विरोध पर डटकर तीखा व्यंग्य किया गया है। ईसाई धर्मांतरण की भी पोल खोली गई है। इसमें शक नहीं कि इसका मुख्य निशाना वह पाखंड है, जो हिंदू धर्म के नाम पर चल रहा है। कुछ लोगों ने इस असंतुलन पर प्रश्न उठाए हैं। इस पर मैंने जवाबी प्रश्न किया कि क्या उन्होंने 'सत्यार्थ प्रकाश' पढ़ा है? स्वामी दयानंद ने अपने 'सनातन हिंदू धर्म' की समीक्षा दस अध्यायों में की है और अन्य सारे मजहबों को शेष चार अध्यायों में निपटाया है। क्यों? इसलिए कि वह ग्रंथ मूल रूप से भारतीयों के लिए लिखा गया था। यह फिल्म भी भारतीयों के लिए ही बनी है। यदि यह अरबों के लिए बने तो इसका फोकस इस्लाम पर होगा और यूरोपीयन अमेरिकियों के लिए बने तो जाहिर है कि इसका फोकस ईसाइयत पर होगा।

शेष पृष्ठ 7 पर....

thearyasamaj.org

* ओ३म् *

पञ्चायतन पूजा

-: वेद-मन्त्र :-

गतांक से आगे....

(3) इसके बाद हम [अर्चत] = आचार्यों का आदर करें। हम उनको उचित आदर देकर उनके प्रिय बनते हैं और ऊंचे से ऊंचे ज्ञान को प्राप्त करने वाले होते हैं। द्रोणाचार्य का आदर जैसे अर्जुन ने किया वैसे भीम ने नहीं। परिणामत: भीम उतना उत्तम धनुर्धर न बन पाया जितना कि अर्जुन। विश्वामित्र का आदर लक्ष्मण ने उतना नहीं किया जितना कि राम ने, इसीलिए बला और अतिबला विद्याओं को राम ने जैसे सीखा वैसे लक्ष्मण ने नहीं।

(4) [उत] = अब गृहस्थ में आने पर विद्वान् अतिथियों के [पुत्रका:] = पुत्रतुल्य ये गृहस्थी [अर्चन्तु] = उन व्रती विद्वानों का आदर करें। उनका आदर करने से घर स्वर्गतुल्य बना रहता है। परस्पर वैमनस्य उत्पन्न नहीं होता और जीवन में माधुर्य विद्यमान रहता है। यही जीवन रूप चित्र का finishing touch है। इस अर्चन से कुलधर्म नष्ट नहीं होते।

(5) इन सब पूजाओं के अतिरिक्त [इत्] = निश्चय से [पुरं] = उस पूरण करने वाले सब प्रकार की न्यूनताओं को दूर करने वाले [धृष्णु] = सब काम, क्रोध, लोभ आदि की वासनाओं का धर्षण करने वाले प्रभु की [अर्चत] = उपासना करो। इस प्रभु की उपासना के अभाव में हम भद्र होते हुए भी अभद्र से रह जाते हैं—हम काम से ऊपर नहीं उठ पाते। यह काम हमारे जीवन को कुछ अन्धकारमय अशक्त व उत्साहशून्य बना देता है।

'प्रियमेध आंगिरस' तो वही बन सकता है जो कि 5 वर्ष तक माता, 8 वर्ष तक पिता, 25 वर्ष तक आचार्य, 50 वर्ष तक अतिथियों व अग्रिम जीवन में प्रभु के निर्देशों के अनुसार जीवन को बिताने का ध्यान करे।

मातृ अर्चन से चरित्र, पितृ अर्चन से शिष्टाचार, आचार्यार्चन से बुद्धि व ज्ञान, अतिथि अर्चन से कुलधर्म का और अविनाश प्रभु अर्चन से पालन पूरण तथा वासना धर्षण सिद्ध होता है।

भावार्थ—पंचायतन पूजा हमारे जीवन को सर्वांग सम्पूर्ण बनानेवाली हो।

अमूल्य वचन

1. सोमपालक का ईश्वर से साक्षात्कार होता है।
2. सोम के द्वारा दक्षता, दानववृत्तिदमनशीलता, रोगहरण की शक्ति, प्राणवर्धन, कर्मसामर्थ्य, उल्लास व दिव्यता आदि सात रत्नों से अपने जीवन को सुशोभित करें।
3. मैं संयमी बनूं और संयम मुझे उत्साह, यश व श्री को प्राप्त कराये।
4. हम सोम के संयम से ज्ञान की दृष्टि से क्रान्तदर्शी बनें। हमारे कार्य-प्रज्ञापूर्वक हों। हम शरीर व मस्तिष्क के दृष्टिकोण से अक्षीण शक्ति बनें।
5. हम प्राणसाधना करके दीव्यता को प्राप्त हों।
6. हम सदा जागृत रहें। अपने लक्ष्य को भूल न जायें।
7. ब्रह्मचर्य से हमें वह ज्योति प्राप्त हो जो मनुष्यमात्र की अभिवृद्धि की हेतु बने।
8. मैं इस तत्त्व को समझूं कि कुटिलता व दुर्गति का कार्य कारण का सम्बन्ध है। कुटिलता से ऊपर उठने के लिए द्वेष से ऊपर उठूं। द्वेष से ऊपर उठने के लिए तीन भावनाओं को अपने अन्दर समान रूप से प्रवृद्ध करूं—दान, मित्रता व व्रतित्व।
9. आत्मसंयम से मैं इन्द्रियों को आत्मा के साथ विचारने वाला बनाकर वेदवाणी का रस लेने वाला बनूं।
10. मैं सदा प्रसन्नेन्द्रिय सज्जनों के साथ रहने वाला बनूं। —**आचार्य बलदेव**

भजनोपदेशकों के लिए सभा से सम्पर्क करें—

प्रदेश की सभी आर्यसमाजें अपने आर्यसमाज के वार्षिकोत्सव या अन्य विशेष कार्यक्रमों के लिए भजनोपदेशकों के प्रोग्राम सुनिश्चित करने के लिए आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा दयानन्दमठ रोहतक से एक मास पूर्व पत्र द्वारा सम्पर्क करें। —सभामन्त्री

भारतीय गणतन्त्र

परमपिता परमेश्वर ने सृष्टि की रचना के साथ-साथ सृष्टि के सुचारु संचालन के लिए चार वेदरूपी संविधान का निर्माण किया। उस वेदरूपी संविधान के अनुकूल सृष्टि का सुन्दर संचालन होता है। उसी तरह उस भारत देश के सुसंचालन के लिए 15 अगस्त 1947 में स्वतन्त्रता प्राप्ति के पश्चात् के तत्कालीन राष्ट्रनेताओं ने देश को गति देने के लिए तथा सुशासन के लिए एक संविधान बनाया और 26 जनवरी 1950 को वह संविधान देश में विधिवत् लागू कर दिया गया और भारत एक स्वतन्त्र्य प्रभुसत्ता पूर्ण देश कहलाया।

आचार्य राजकुमार शर्मा

भारत प्राचीन काल से ही ऋषियों का, भक्तों का, संतों का, तपस्वियों का, राष्ट्रभक्तों का, वीर पुरुषों का, महापुरुषों का क्रान्तिकारियों का, बलिदानियों का तथा शहीदों का देश रहा है।

इस देश के महापुरुषों ने वेद के उस सन्देश को जन--जन तथा घर-घर तक पहुंचाया जिसमें मातृभूमि के मान व सम्मानके लिए कहा गया कि भूमि मेरी माता है और मैं उसका पुत्र हूँ। मातृभूमि की रक्षा हेतु प्राचीन काल से ही भारत का एक-एक बच्चा राष्ट्रभक्त सैनिक को तरह सीना तानकर खड़ा रहा है और आज भी तत्पर है।

इस राष्ट्र की की अस्मिता की रक्षा हेतु तथा मातृभूमि की रक्षा हेतु जहां छत्रपति शिवाजी महाराज ने अपनी तलवार से विधर्मियों का खात्मा किया तो महाराणा प्रताप ने उनका मुकाबला करने के लिए भाला उठाया। अंग्रेजों के शासन से मुक्ति दिलाने के लिए नेता जी सुभाषचन्द्र बोस ने आजाद हिन्द फौज की स्थापना की तो रामप्रसाद बिस्मिल ने निर्धनता की परिस्थितियों में भी राष्ट्रोत्थान के लिए हँसते-हँसते फांसी के फन्दे को चूम लिया। धर्म की रक्षा के लिए चन्द्रशेखर आजाद अंग्रेजों से लोहा लेते हुए अपनी अन्तिम गोली अपनी कनपटी पर चलाकर आजाद नाम को सार्थक करते हुए शहीद हो गए तो सरदार भगतसिंह अपने देशभक्त मित्रों सुखदेव राजगुरु के साथ देश की आजादी के लिए अपने खेतों में अन्न के स्थान पर बन्दूकों की खेती करने का सपना देखते हुए अंग्रेज को भारत से भगाने के महान् कार्य में सफल होकर शहीद हो गए। इस देश की संस्कृति की रक्षा के लिए लाल बहादुर शास्त्री जी ने ईमानदारी व सच्चाई की अद्भुत मिशाल प्रस्तुत की तो सरदार वल्लभ भाई पटेल ने अपनी शक्ति का लोहा देश के दुश्मन तथा आततायी हैदराबाद के निजाम से मनवाया। पराधीन भारत को पूर्ण स्वतन्त्रता दिलाने के लिए 19वीं शताब्दी के महान् क्रान्तिकारी संन्यासी, आर्यसमाज के संस्थापक, युग-प्रवर्तक, राष्ट्रभक्त, महर्षि दयानन्द सरस्वती ने 1857 की क्रान्ति युद्ध में वैचारिक क्रान्ति का शंखनाद किया तो दूसरी तरफ उस महान् ऋषि ने सम्प्रदायवाद, रूढिवाद तथा जातिवाद के विरुद्ध सामाजिक व बौद्धिक ज्ञान का प्रसार कर मानवता तथा प्राणिमात्र के कल्याण हेतु एक नहीं अपितु अनेक बार विषपान करके विश्व के इतिहास में अमर हो गए। धर्म की रक्षा के लिए पं० लेखराम और महाशय राजपाल जी ने प्रकाशन कार्य के माध्यम से वैदिक नाद बजाकर विधर्मियों का मुकाबला करते हुए पेट में छुरे खाए तो स्वामी श्रद्धानन्द ने अंग्रेजों की संगीन को अपनी छाती खोलकर सिंहगर्जना करते हुए संस्कृति की रक्षा के लिए झुका दिया और शुद्धि आन्दोलन चलाकर अपने भारत के अमृत पुत्र और पुत्रियों को पुन: आर्य बनाकर अपनी छाती में गोलियां खाईं और शहीद हो गए। पं० गुरुदत्त विद्यार्थी ने परमात्मा की अमृतवाणी वेद का प्रचार करते हुए 26 वर्ष की अल्पायु में वीरगति प्राप्त की तो स्वामी स्वतन्त्रानन्द ने धर्मयुद्ध में अपने सिर पर अनेक शस्त्रास्त्रों के वार सहकर धर्म की रक्षा की।

चिन्तन इस बात का करना है कि क्या इस देश का संविधान सभी देशवासियों के लिए समत्व भाव रखता है। क्या यह संविधान प्रत्येक मत अथवा सम्प्रदाय के लिए समानता समानता प्रदान करता है। मुझे यह कहने में किंचिन्मात्र भी संकोच नहीं कि आज कश्मीर अपने अस्तित्व की रक्षा के लिए तथा आजादी के लिए तड़प रहा है तो आसाम में वोडो उग्रवादी अपना

शेष पृष्ठ 4 पर....

thearyasamaj.org

पं० चन्द्रभानु आर्य को दी भावभीनी श्रद्धांजलि

आर्यसमाज के दिग्गज भजनोपदेशक और साहित्यकार, शांतिधर्मी के प्रकाशक और प्रधान सम्पादक पं० चन्द्रभानु आर्य का गत 23 दिसम्बर 2014 (पौष शुक्ला द्वितीया) को रात्रि 11:35 पर देहावसान हो गया। वे 85 वर्ष के थे। 24 दिसम्बर को अंत्येष्टि संस्कार पं० ईश्वरचन्द्र शास्त्री ने पूर्ण वैदिक रीति से सम्पन्न कराया, जिसमें नगर व आस-पास के हजारों लोगों ने उन्हें अन्तिम विदाई दी। उनके सम्मान में स्वर्णकार बाजार बन्द रहा।

पं० चन्द्रभानु आर्य का जन्म पौष शुक्ला द्वितीया को ही सन 1930 में जिला पानीपत के गांव लोहारी में पिता श्री हरज्ञान सिंह व माता श्रीमती मानकौर के यहाँ आर्यसमाजी स्वर्णकार परिवार में हुआ था। 4 वर्ष ग्राम कालखा में संस्कृत पाठशाला में अध्ययन कर के 1948 में गुरुकुल घरौंडा में प्रवेश ले लिया। स्वामी भीष्म जी व स्वामी रामेश्वरानन्द जी से शिक्षा ग्रहण कर 21 जनवरी 1951 से आर्यसमाज के भजनोपदेशक के रूप में कार्य प्रारम्भ कर दिया। आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब (संयुक्त) की सेवा में रहते हुए 1957 में हिन्दी आन्दोलन का प्रचार और धन संग्रह किया तथा 2 मास तक हिसार जेल में रहे। आपने सार्वदेशिक सभा के अन्तर्गत दिल्ली वेद प्रचार मण्डल, आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब, आर्य प्रतिनिधि सभा हरियाणा, आर्यसमाज हिसार, आर्यसमाज पानीपत, आर्य-समाज जींद, आर्यसमाज हांसी, वेद प्रचार मण्डल जींद आदि के माध्यम से लगभग 64 वर्ष प्रचार किया। अपने जीवन में सैकड़ों आर्यसमाजों की स्थापना कर उनका सबंध सभा से स्थापित किया। जींद में स्वामी रत्नदेव जी द्वारा स्थापित स्वामी भीष्म भजनोपदेशक महाविद्यालय के दो वर्ष तक प्राचार्य रहे। आर्ष गुरुकुल कालवा, सिंहपुरा, जुलाना, खरल, कुम्भाखेड़ा, आर्यनगर आदि नवस्थापित और पूर्व-स्थापित गुरुकुल कुरुक्षेत्र, मटिण्डु, घरौंडा, गदपुरी, इन्द्रप्रस्थ आदि प्राय: सभी गुरुकुलों के लिए समय समय पर अन्न- धन आदि का संग्रह किया। हरियाणा में आर्यसमाज के इस पीढ़ी के भजनोपदेशकों में चन्द्रभानु आर्य जी ने सर्वाधिक लेखन कार्य किया। उन्होंने लगभग 40 भजन इतिहास और 5 हजार से अधिक अन्य फुटकर भजनों की रचना की। आर्यसमाज के इतिहास में संभवत: पहली बार किसी भजनोपदेशक की रचना को हरियाणा

साहित्य अकादमी ने प्रकाशनानुदान प्रदान किया। उनके जीवन काल में कुल 12 भजनों की पुस्तकें प्रकाशित हुईं। उन्होंने 5 पुस्तकों का सम्पादन भी किया। फरवरी 1999 से वे यशस्वी मासिक पत्र शांतिधर्मी का प्रकाशन व सम्पादन कर रहे थे। उनके द्वारा लिखित शांति प्रवाह पाठकों को विशेष प्रेरणा देने वाला था। उन्होंने अपने जीवन काल में दर्जनों भजनोपदेशक तैयार किये जिनमें लगभग 12 शिष्य अब भी देश भर में सफल प्रचारक हैं। अन्तर्राष्ट्रीय आर्य महासम्मेलन मथुरा में उन्हें 'संगीत भास्कर' सम्मान से सम्मानित किया गया। अन्तर्राष्ट्रीय आर्य महासम्मेलन दिल्ली-2012 में भी उन्हें उनकी सेवाओं के लिए सम्मानित किया गया। आर्य प्रतिनिधि सभा मध्य प्रदेश द्वारा 'आर्य-सेवक' के शताब्दी समारोह में 'सम्पादक श्री' सम्मान दिया गया। हिन्दी साहित्य सम्मेलन गाजियाबाद द्वारा प्रशस्ति पत्र व 'आचार्य महावीरप्रसाद द्विवेदी सम्मान' से भी वे अलंकृत हुए। वे अपने पीछे पुत्र, पौत्रों और प्रपौत्र सहित भरा पूरा परिवार छोड़ गए हैं।

4 जनवरी 2014 को उनके प्रति श्रद्धांजली सभा का आयोजन किया गया। मौसम की प्रतिकूलता के बावजूद सैकड़ों गणमान्य व्यक्तियों ने उनके महनीय व्यक्तित्त्व को याद किया। स्वामी आर्यवेश जी, स्वामी रामवेश जी, स्वामी धर्मदेव जी, आचार्या डॉ० दर्शना खरल, ब्र० दीक्षेन्द्र जी, जिला वेदप्रचार मण्डल के प्रधान मा० रायसिंह आर्य, रामकुमार आर्य वेद प्रचार मण्डल हिसार, इण्डस शिक्षण संस्थाओं के निदेशक सुभाष श्योराण, प्रो० ओमकुमार आर्य, पं० रामरख भिवानी, पं0 रामेश्वरदत्त, पं० रामकुमार बाघडू, नगरस्थ सभी आर्यसमाजों, हिन्दी साहित्य प्रेरक संस्था, स्वामी भीष्म वेद प्रचार मण्डल, घरौंडा, विश्वकर्मा सभा नारनौंद, मैढ सुनार सभा, स्त्री आर्यसमाज, आर्य समाज नरवाना, सफीदों, बुडायन, कापड़ो, खटकड़, जुलानी, अहिरका, गुसांईखेड़ा, जुलाना, उचाना आदि व बीकानेर, रोहतक, आट्टा, काबड़ी, हिसार, उकलाना, माजरा, मतलौढा, लोहारी आदि से पधारे गणमान्य व्यक्तियों ने उन्हें श्रद्धांजलि दी, दूरभाष और ई-मेल के माध्यम से देश-विदेश से श्रद्धांजलि संदेश प्राप्त हुए। स्वर्णकार सभा के प्रधान फूलसिंह वर्मा, डॉ० राममेहर वर्मा आदि ने भी उनके निधन पर गहन संवेदना व्यक्त की। पंडित जी के सुपुत्रों रमेशचन्द्र आर्य, सहदेव शास्त्री व रवीन्द्र कुमार आर्य ने सभी गणमान्य व्यक्तियों का आभार व्यक्त किया।

प्रेषक : सहदेव शास्त्री, सुपुत्र
(94162 53826)

भारतीय गणतन्त्र... पृष्ठ 3 का शेष.....

आतंक मचा रहे हैं। आप छत्तीसगढ़ और झारखण्ड नक्सलियों के नक्सलवादरूपी आग से झुलस रहे हैं तो पंजाब में खालिस्तान का नारा पुन: करवटें ले रहा है। नागालैण्ड में अलगाववाद के नाग अपना फन फुंकार रहे हैं तो केरल में भारतीय संस्कृति ईसाइयत की मार से दुखी होकर त्राहि माम्-त्राहि माम् कर रही है।

समस्त भारत अलगाववाद, आतंकवाद, जातिवाद, सम्प्रदायवाद तथा तथाकथित धर्मवाद की भयंकर आग में धूँ-धूँ कर जल रहा है। मैं पूछना चाहता हूँ राष्ट्रनेताओं से यह कैसा संविधान है, यह कैसा कानून है। जिस देश में रहने वालों को अपने ही देश से प्यार नहीं है तो कैसी राष्ट्रभक्ति है यह।

किसी को भारत माता की जय बोलने में सम्प्रदायवाद, की दुर्गन्ध आती है तो कोई वन्दे मातरम् कहने में राष्ट्रद्रोह की भावना देखता है। कोई भारत संस्कृति के सुख की मूलाधार, रोग निवारक गोमाता की हत्या करने में भारतीयता मानता है तो कोई सकल प्रकृति के स्वामी हिरण का मांस खाकर अपने को धन्य मानता है। कोई वेद और गीता को राष्ट्रीय ग्रन्थ घोषित करने पर साम्प्रदायिकता के दर्शन करता है तो कोई बाइबिल जैसे सिद्धान्तहीन ग्रन्थ को ईश्वरीय वाणी मानकर निर्धन और लाचार जनता को लालच देकर धर्म से गिराता है। मैं पूछता हूँ कि ये कैसा संविधान है। चिन्तन तो करना ही होगा कि यदि भारत का अन्न खाते हैं तो हित भी भारतमाता का सोचना होगा और कहना पड़ेगा कि—

भारत में यदि रहना होगा,
वन्दे मातरम् कहना होगा।

अन्त में यही कहूँगा कि संविधान की रक्षा हेतु जो संसद में जायेगा।

तंत्र मंत्र की लाज रखे,
तो देशभक्त कहलायेगा।
देशद्रोही को सजा मिले,
तो देश महान् हो पायेगा।
समनियमों का पालन 'राज'
गणतन्त्र सफल हो जायेगा।

—आचार्य राजकुमार शर्मा, वैदिक प्रवक्ता, संस्कृत धर्माचार्य, आर्य बाल भारती पब्लिक स्कूल, पानीपत

'आर्य प्रतिनिधि' साप्ताहिक के प्रसार में सहयोग दें

'आर्य प्रतिनिधि' साप्ताहिक समाचार-पत्र उलट-पुलट कर रख देने लायक नहीं, बल्कि गम्भीरता पूर्वक पढ़ने लायक समाचार-पत्र है। यदि आप इसे पढ़ेंगे तो हमें विश्वास है कि पसन्द भी करेंगे और चाहेंगे कि इसे और भी पढ़ें। कृपया अपने जैसे गभीर पाठकों से **'आर्य प्रतिनिधि'** साप्ताहिक समाचार-पत्र की चर्चा करें, उन्हें इसका ग्राहक बनने के लिए प्रेरित करें।

'आर्य प्रतिनिधि' साप्ताहिक समाचार-पत्र का वार्षिक शुल्क 150/- रु० एवं आजीवन शुल्क 1500/- रु० है।

आप उपरोक्त राशि आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा दयानन्दमठ रोहतक के नाम से बैंक ड्राफ्ट मनीआर्डर द्वारा भिजवाकर सदस्य बन सकते हैं।

—व्यवस्थापक

hearyasamaj.org

लोकसेवा ही ईश्वर की सच्ची सेवा है

❑ स्व० श्री पं० रामचन्द्र जी देहलवी (शास्त्रार्थ महारथी)

आजकल लोग ईश्वर की उपासना के लाभ पूछते हैं। मैं ऐसे लोगों के विश्वास के लिए यह मजमून रख रहा हूँ कि हमारे पास ईश्वर की उपासना का क्या अर्थ है? यदि आप किसी मुसलमान से यह प्रश्न करें तो वह कहेगा कि हम खुदा की इबादत करते हैं। 'इबद' का अर्थ बदा है अर्थात् वे अपने खुदा के सामने अपने बदा होने की प्रतिज्ञा करते हैं और उससे शब्द बन्दगी निकलता है। लोग आजकल प्राय: एक दूसरे को बन्दगी करते हैं। हिन्दू भी प्राय: ऐसा करते हैं। तो ऐसा कहकर अपने आपको गुलाम बनाया जाता है। इसलिए कम से कम हिन्दुओं को ऐसा शब्द नहीं कहना चाहिए। अब आप एक सनातनी से पूछे वह कहेगा कि हम परमात्मा की भक्ति करते हैं। भक्ति का अर्थ सेवा है। परन्तु आर्यसमाज की उपासना का अर्थ है परमात्मा के निकट होना। परमात्मा के नजदीक रहने का क्या है मतलब इसके साथ ही मुसलमानों की इबादत और सनातनियों की भक्ति इन तीनों पर रोशनी डालूंगा।

मैंने एक बार दीनानगर के एक शास्त्रार्थ में मुसलमान भाई से पूछा कि आप बतलाएँ कि इस नमाज का क्या अर्थ है? इससे क्या लाभ है? उसने फरमाया कि हम खुदा का अदब बजा लाते हैं? मैंने उनसे पूछा कि क्या खुदा इससे प्रसन्न हो जायेगा, क्या वह बाह्य चीजों से प्रसन्न होता है या आन्तरिक भाव देखकर? यदि आन्तरिक भाव देखकर तो बाह्य दिखावट का क्या लाभ? इसके अतिरिक्त मैंने यह प्रश्न किया कि सचमुच खुदा प्रसन्न होगा, यदि वह खुश होगा तो उसमें तबदीली आ गई। आपने एक कुरान शरीफ की आयत पढ़कर इस बात को दर्शाया कि खुदा ने अपने बन्दों को इबादत के लिए उत्पन्न किया उसे किसी वस्तु की आवश्यकता नहीं। इसलिए उसमें तबदीली नहीं आती। तो फिर खुश करने का क्या अर्थ? वह भाई उससे आगे न चल सका। अब आर्यसमाज की उपासना को लें। हम पर यह प्रश्न किया जाता है कि उसके समीप जाने का क्या अर्थ है? क्या परमात्मा दूर है या इसके निकट जाएं। हमारा कहना यह है कि परमात्मा और जीव के अन्दर मकानी (दैशिक) या जमानी (कालिक) कोई फासला नहीं। मतलब यह है कि यदि हम परमात्मा के गुणों को अपने अन्दर धारण कर लें तो हम उसके निकट चले जायेंगे। परमात्मा हर स्थान पर विद्यमान है। वह जीव के साथ रहता है। हम में और उसके मध्य इल्मी फासला है। उदाहरण रूप में कई वस्तुएं हमारे निकट होती हैं परन्तु हमें पता नहीं चलता। कई बार लेखनी कान में होती है हम उसे मेज पर ढूंढ़ते हैं। गाजियाबाद में एक बार मैंने अंधकार में अपना उपनेत्र (ऐनक) पगड़ी में रख दिया। जब ऐनक का ख्याल आया तो हम इधर-उधर ढूंढ़ते रहे। अन्त सिर की पगड़ी में से मिल गई। मतलब यह कि यह इल्मी भूल थी। परमात्मा जाहिलों (मूर्खों) से दूर है और आकिलों (बुद्धिमानों) के समीप है।

अब सनातनियों की भक्ति को लीजिए। मैंने एक भाई से पूछा कि सेवा के क्या अर्थ हैं वह खिदमत के अर्थ न कर सका। मैंने कहा कि समय पर किसी मनुष्य की आवश्यकता पूरा करना। अब आवश्यकता किसे कहते हैं? मुझे एक बार अध्यापक ने आवश्यकता का अर्थ बताया कि जिस वस्तु के बिना हमारा जरूर नुकसान हो उसे जरूरत कहते हैं। अर्थात् जिस वस्तु के बिना हम रह नहीं सकते वही जरूरत है। यदि हम जल न पीएं तो मर जायें। परन्तु क्या आपने इस बात पर विचार किया है कि जिस ईश्वर की आप जरूरियात (आवश्यकतायें) पूरी कर रहे हैं, उसकी आवश्यकताएं क्या हैं?

हम किसी को प्रसन्न करने के लिए सबसे प्रथम यह देखते हैं कि उसे किस वस्तु की आवश्यकता है। मैं एक मनुष्य के घर अभ्यागत रूप से जाता हूँ। वह मुझ से पूछता है कि आप क्या खायेंगे? वह पूछता है कि आप चाय पीवेंगे? मैं कहता हूँ कि चाय मैंने कभी नहीं पी। तब वह कहता है कि अच्छा दूध पी लो। मैंने कहा दूध रात को पीता हूँ, वह कहता है कि अच्छा पूरी खा लो, रोटी खा लो। मैं कहता हूँ कि अभी रोटी की जरूरत नहीं। गर्जोक वह ऐसी चीज ढूंढ़ना चाहता है जिससे कि वह मुझे प्रसन्न करे। परन्तु कभी चूक भी हो जाती है। भाषा की गलतफहमी हो जाती है और सेवा बेजारीति से भी हो सकती है। एक बार लाला लाजपतराय जी गुजरात काठियावाड़ में गये। वहां उन्हें एक सज्जन ने चाय पर बुलाया। चाय पेश की जब और देने लगे तो लाला जी ने कहा कि काफी है। उन्होंने फिर पूछा फिर लाला जी ने कहा कि काफी है। काफी का अर्थ है कि और नहीं चाहिए परन्तु उन्होंने उसको 'पीने वाली' समझा और वह काफी बनाकर लालाजी के सामने ले आए। इस प्रकार बेजा तरीके से भी खिदमत हो सकती है। एक रोगी को बादाम का हलवा खिला दिया जाये तो यह उसकी सेवा नहीं है बल्कि हानिकारक है। एक वृद्ध को यदि कठिन लड्डू दे दिये जायें तो वह अप्रसन्न हो जाएगा। इसी प्रकार किसी का उदर भरा हुआ हो, उसे खाने के लिए दिया जाये और जो भूखा है उसे न खिलाया जाये यह भी एक गलती है। मूर्ति को हलवा खिलाया जाता है किन्तु वह उसके होठों के आगे नहीं जाता, सब जानते हैं। देहली में स्त्रियां एक स्थान पर मूर्ति की, पूजा करती हैं। वहाँ पर कई पदार्थ खाने के लिए पेश किये जाते हैं। एक बार मुझे उधर से गुजरने का अवसर मिला। स्त्रियाँ मूर्ति के मुख पर हलवा लगा रही हैं। मैंने सोचा चलो इन्हें कुछ उपदेश ही दे चलें। मैंने मूर्ति के समीप जाकर देखा कि मूर्ति के होठों पर हलवा कई दिनों से चिमट कर सूख गया है और लकड़ी की तरह हो गया है। मैंने देवियों से कहा यह तो पहला हलवा भी नहीं खाती और इसे क्यों खिलाती हो देख लो यह कितने दिन का हलवा इस पर लगा हुआ है। देवियाँ देखकर हँस पड़ीं। मैंने कहा यह मूर्तियाँ कुछ नहीं खाती। यदि यह खाने लग जावे तो सबसे पहले उनका विरोध पुजारी ही करेंगे क्योंकि अगर मूर्तियां ही सभी कुछ खा जावें तो पुजारियों का क्या मिले।

परमात्मा पूर्ण है उसे किसी वस्तु की आवश्यकता नहीं, परन्तु फिर भी कोई लड्डू ले जा रहा है कोई फूल। ईश्वर पूर्ण है और प्रकृति जड़। जो चीज पूर्ण है कि वह किसी से कुछ नहीं चाहती वह दूसरों के लिए हैं प्रकृति न अपने सम्बन्ध में कुछ जानती है और न किसी के विषय में, किन्तु ईश्वर अपने आपको भी जानता है और दूसरों को भी। एक ईश्वर पूर्ण है और दूसरी प्रकृति। न ईश्वर को किसी चीज की आवश्यकता है न प्रकृति को। उनसे कोई चीज ली जा सकती है, उन्हें दी नहीं जा सकती। आर्यसमाजी उपासना करना चाहता है ईश्वर के समीप बैठना चाहता है इसलिए कि ईश्वर से कुछ लेकर उसकी खिदमत करे। अब खिदमत किस तरह की जाती है। आप एक पंडित जी के घर जाते हैं और एक हाथी का खिलौना भी उनके घर ले जाते हैं। आप पंडित जी के लड़के को वह हाथी देते हैं और कहते हैं कि लो बालक। इस पर सवारी करो। पंडित जी बहुत प्रसन्न होंगे और आपका सत्कार करेंगे। परन्तु वही हाथी आप लेकर पण्डित जी यह है आप इसकी सवारी के लिए, पण्डित जी। यह है आपकी सवारी के लिए, पंडित जी अति क्रोध करेंगे। उनकी स्त्री अलग नाराज, बच्चा दूर-दूर। अब हाथी को दोनों अवस्थाओं में एक ही घर में रहना है फिर कारण क्या है कि बच्चे को देने पर पण्डित जी जो खुश पर जब उन्हें दिया गया तब नाराज।

लोकसेवा ही ईश्वर की खिदमत है। पण्डित जी को उस हाथी की जरूरत नहीं किन्तु उसके लिए वह अत्यन्त हेय है, परन्तु यदि उसे दिया तो वह बड़ा नाराज होगा। क्या ईश्वर नाराज न होगा। यदि उस किसी वस्तु की आवश्यकता न हो और दी जाय। यदि वही चीज उसके बच्चों को दी जाय तो वह प्रसन्न होगा और यह उसकी सेवा है, भक्ति है। खिदमते खलक भी ईश्वर की उपासना और खिदमत है अगर उसके बच्चों को लाभ पहुँचेगा तो ईश्वर प्रसन्न होगा। अब आप सब शंका में पड़ जायेंगे कि यदि लोकसेवा ही ईश्वर की उपासना है तो दो समय सन्ध्या पढ़ने की क्या आवश्यकता है। इसके सम्बन्ध में आपको बदला दूँ कि दो समय सन्ध्या पढ़ना जरूरी ही है। सन्ध्या करना अपने आपको खलक की सेवा के लिए तैयार करना है।

(साभार-टंकारा समाचार)

thearyasamaj.org

स्वास्थ्य चर्चा–

सूक्ष्म जन्तु और संक्रमण

❑ स्वामी ब्रह्मानन्द सरस्वती, मो० : 9416133594

गतांक से आगे....

यहां यह बता देना आवश्यक प्रतीत होता है कि जन्तुओं के भी दो भेद होते हैं—

(क) प्राणिवर्ग से इनको जीवाणु संज्ञा दी गई है। यह जीवाणु प्राणिवर्ग के सबसे सूक्ष्म एक सेल युक्त जीव होते हैं, अणुवीक्षण यन्त्र द्वारा देखे जा सकते हैं। इनके कुछ उदाहरण निम्नोक्त हैं—

(1) मलेरिया ज्वर (विषम ज्वर=Plamodium) यह जीवाणु तीन प्रकार के होते हैं।

(2) काला आजार और लोकल सोर का जीवाणु (Leishmania)।

(3) अतिनिद्रा रोग का जीवाणु (Trypanosonic)।

(4) अमीबिक प्रवाहिका (Amoeba)।

(5) वेलनटिडियम कोलाय (Balanti dium cooli) के कारण प्रवाहिका।

(6) अतिसार जियार्डिया लाम्बल्या (Giardia Lamblia) के कारण।

(7) स्पाइरोकीटा जाति के जीवाणु (Spirochaetal Infectuns) के कारण।

(क) उपदंश (Syphilis) सिफीलिस।

(ख) कामला विशेष।

(ग) पुनरावर्तक ज्वर (Relapsing fever)

(घ) मूशक दंशक ज्वर।

इनके अतिरिक्त अन्य अनेक सूक्ष्म जन्तु हैं जो मनुष्य के शरीर में प्रवेश करके रोग उत्पन्न करते हैं तथा कई जन्तु प्राणी ऐसे होते हैं जो शरीर (आन्त्र) में रहते हैं किन्तु रोग उत्पन्न नहीं करते।

वक्तव्य-मनुष्य शरीर में प्रविष्ट होकर रोग उत्पन्न करने वाले कई जन्तु प्राणी ऐसे हैं जो सूक्ष्म नहीं होते, आंखों से नजर आते हैं। वह प्राय: विष उत्पन्न नहीं करते। अपितु अन्य प्रकार से रोग उत्पन्न करते हैं तथा रक्त वाहिनियों तथा लसिका वाहिनियों में रहकर उनका मार्ग बन्द कर देते हैं अथवा आन्त्र में रहकर रक्त चूसते हैं या शरीर के अन्य भागों में शोथ आदि विकृति उत्पन्न करते हैं। कई दृश्य जीवाणु ऐसे होते हैं जो विष भी उत्पन्न करते हैं। यद्यपि इस श्रेणी के जन्तुओं का वर्णन इस प्रकरण में असंगत है तो भी विषय स्पष्टार्थ यहाँ संकेत कर दिया गया है।

(ख) वनस्पति वर्ग-इनको कीटाणु (Bacteria) संज्ञा दी गई है, यह भी एक सेल से बने हुए हैं। ये दो प्रकार के होते हैं—

(1) बैंसीलस (Bacillus) ये शलाकाकार होते हैं, यथा प्लेग का बैसीलस, राज्यक्षमा का बैसीलस (ट्यूबर कूलर बैसीलस) कुछ शलाकाकार मुडे हुए होने से विराम चिह्न (,'',,) से नजर आते हैं जैसे विशूचिका का कीटाणु (कालरा विब्रियो)।

(2) काकस (Coccus) ये बिन्दु आकार के होते हैं। ये बिन्दु आकार कीटाणु (काकस) कई समूह रूप में रहते हैं जिनको स्टैफिलोकाकस (Staphycoccus) कहते हैं।

वक्तव्य-बक्टीरिया दो प्रकार के होते हैं। एक वह जो शरीर में जाकर रोग उत्पन्न करते हैं, इन्हें रोगात्पादक कीटाणु कहते हैं।

दूसरे वह जो हमें किसी प्रकार की हानि नहीं पहुंचाते प्रत्युत उनमें कई हमारे लिए लाभदायक और आवश्यक हैं। जैसे-दूध को जमाने वाले, खमीर उठाने वाले (आसव अरिष्ट बनाने वाले) और खाद को उपयुक्त बनाने वाले कीटाणु।

क्रमश:

वेदप्रचार कार्यक्रम सम्पन्न

आर्यसमाज बालन्द जिला रोहतक से श्री जगतसिंह आर्य व श्रीमती कृष्णादेवी आर्या दोनों पति-पत्नी प्रत्येक छह मास बाद ग्राम बालन्द में वैदिक प्रचार कार्यक्रम करवाते हैं और दोनों मिलकर अन्धविश्वास, पाखण्ड से सम्बन्धित अलग-अलग विषयों की पुस्तकें अपने खर्च पर छपवाकर नि:शुल्क वितरित करते हैं।

मैं (श्रीमती कृष्णा देवी) जब 2007 में टंकारा (गुजरात) गई तो मैंने वहाँ पर प्रतिज्ञा की कि मैं वेद तो पढ़ा नहीं सकती, लेकिन स्वामी दयानन्द सरस्वती के बताये ग्रन्थ वेद का ज्ञान सब तक पहुँचाऊँ, मैंने यही उचित समझा।

मेरा पत्रिका में छपवाने का तात्पर्य यह है कि सबको प्रेरणा मिले और सब वेद की राह पर चलें। —**कृष्णा देवी, आर्यसमाज बालन्द (रोहतक)**

भूल-सुधार

आर्य प्रतिनिधि 'साप्ताहिक' दिनांक 7 जनवरी 2015 के पृष्ठ 8 पर श्री महावीर 'धीर' द्वारा लिखित सृष्टि संवत् से सम्बन्धित लेख में सृष्टि संवत् 1970853115 है, जबकि सही सृष्टि संवत् 1960853115 है। इस भूल के लिए हमें खेद है। -संपादक

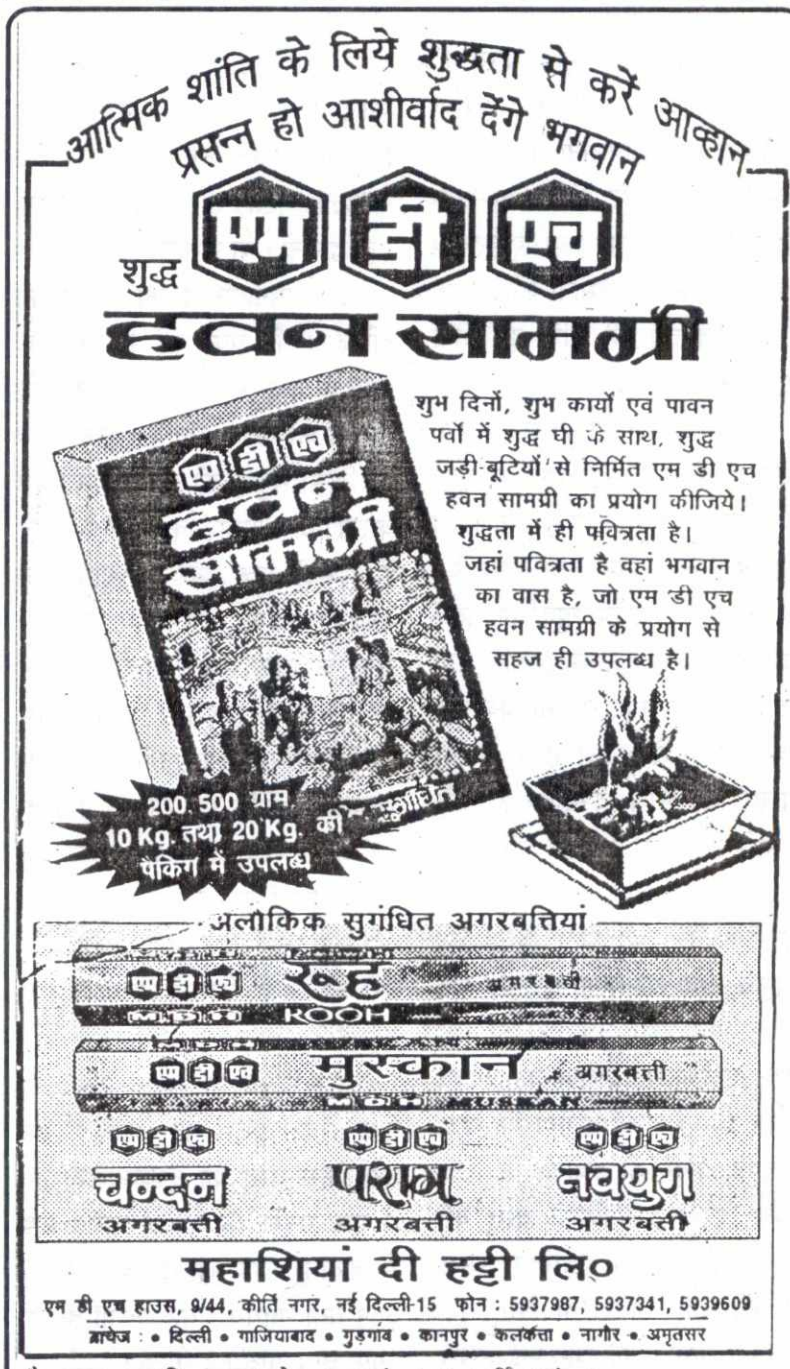

मै० कुलवन्त पिक्कल स्टोर, शाप नं० 115, मार्किट नं० 1, एन.आई.टी., फरीदाबाद-121001 (हरि०)
मै० मेवाराम हंसराज, किराना मर्चेन्ट, रेलवे रोड, रिवाड़ी-123401 (हरि०)
मै० मोहनसिंह अवतारसिंह, पुरानी मण्डी, करनाल-132001 (हरि०)
मै० ओम्प्रकाश सुरिन्द्र कुमार, गुड़ मण्डी, पानीपत-132103 (हरि०)
मै० परमानन्द साईं दित्तामल, रेलवे रोड, रोहतक-124001 (हरि०)
मै० राजाराम रिक्खीराम, पुरानी अनाज मण्डी, कैथल-132027 (हरि०)

प्रेरणा दिवस समारोह

महात्मा कन्हैयालाल महता जी की 22वीं पुण्यतिथि दिनांक 28.01.2015 को महात्मा कन्हैयालाल महता सभागार के.एल. महता दयानन्द महिला महाविद्यालय, के.एल. महता मार्ग, फरीदाबाद एन.आई.टी. में यज्ञ-हवन से प्रारम्भ होकर प्रात: 9 बजे से 1 बजे तक कार्यक्रम सम्पन्न होगा। इस श्रद्धांजलि समारोह की अध्यक्षता आचार्य बलदेव जी महाराज एवं आचार्य विजयपाल जी महाराज करेंगे।

निवेदक : महर्षि दयानन्द शिक्षण संस्थान एवं आर्यसमाज नेहरू ग्राउण्ड, फरीदाबाद

thearyasamaj.org

आर्यसमाज ने बांटे बालिका स्कूल में स्वेटर

कोटा 7 जनवरी। आर्य समाज जिला सभा कोटा की ओर से आज राजकीय बालिका उच्च माध्यमिक विद्यालय बोरखेडा में छात्राओं को गर्म कपडे और कॉर्डियन बांटे गए। स्वेटर और मौजे पाकर छात्राओं के चेहरे खिल उठे।

आर्य समाज जिला सभा के प्रधान अर्जुन देव चढ्डा ने कहा कि आर्य समाज हर वंचित व्यक्ति की सुरक्षा करने में विश्वास करता है। जरूरतमंद की सेवा करने से बडा कोई धर्म नहीं है। भीषण सर्दी से बचाव के लिए बालिकाओं के लिए गर्म कपडे आवश्यक थे। उन्होंने कहा कि आर्य समाज अपने स्थापना काल से ही नारी शिक्षा पर बल देता रहा है। आर्य समाज की ओर से सबसे पहले कन्या पाठशाला जालंधर में खोली गई थी। उन्होंने कहा कि एक नारी पढेगी सारी पीढी तरेगी। बडी कक्षाओं में अध्ययनरत बालिकाएं छोटी कक्षाओं के छात्र-छात्राओं को पढाकर घर में आर्थिक सहयोग करें।

कार्यक्रम के प्रारंभ में स्कूल की शिक्षिकाओं ने अतिथियों का पुष्पगुच्छ भेंट कर स्वागत किया। स्वागत भाषण में स्कूल की प्रधाचा श्रीमति विमला खरोड़िया ने कहा कि मैं महिला शिक्षा के प्रति लोगों को जागरूक करती रहूंगी।

उन्होंने कहा कि आर्य समाज की ओर से छात्राओं को बांटे गए गर्म कपडे भीषण सर्दी में काम आएंगे। इसके बाद उन्होनें आर्य समाज के संस्थापक महर्षि दयानन्द के जीवन पर प्रकाश डाला।

इस अवसर पर हरिदत्त शर्मा प्रधान आर्य समाज रेलवे कॉलोनी, प्रभुसिंह कुशवाह मंत्री महर्षि दयानन्द वेद प्रचार समिति, कृपाल सिंह चौधरी आर्य समाज रेलवे कॉलोनी, राजीव आर्य आदि उपस्थित थे।

गोसंरक्षण एवं गोसंवर्धन में हरियाणा सरकार की सकारात्मक पहल : डॉ. देवव्रत आचार्य

कुरुक्षेत्र 08 जनवरी, 2015। गाय हमारे देश की सांस्कृतिक गतिविधियों का प्राचीन काल से अभिन्न हिस्सा रही हैं। भगवान् श्रीकृष्ण जी द्वारा उठाए गए गोवर्धन-पर्वत का वास्तविक अर्थ गाय के संवर्धन का पर्वत जैसा गुरुतर भार अपने कन्धों पर लेने का ही एक उदाहरण है। देशी गाय का दूध, दही, घी, मूत्र एवं गोमय ये सभी पंचगव्य मानव के लिए महाहितकारी हैं। ये विचार आचार्य देवव्रत, प्राचार्य गुरुकुल ने अभिव्यक्त किए।

आचार्य डॉ. देवव्रत जी

उन्होंने बताया कि गत दिनों हरियाणा सरकार के कृषि, पशुपालन एवं डेयरी विकास मंत्री ओमप्रकाश धनखड़ ने हरियाणा प्रदेश की गोशालाओं के प्रतिनिधियों एवं गोसंवर्धन के कार्य में लगे हुए गोप्रेमियों की विशाल जनसभा का खुला आयोजन किया एवं स्वयं इस कार्यक्रम में मुख्य श्रोता के रूप में उपस्थित रहे। इस कार्यक्रम में गोप्रेमियों ने अपने-अपने सुझाव दिए। इस प्रकार का कार्यक्रम संपूर्ण भारत भर में पहली बार ही किया गया है। सरकार द्वारा गोसंरक्षण एवं गोसंवर्धन के लिए उठाया गया यह बहुत बड़ा कदम है। आचार्य देवव्रत ने हरियाणा के माननीय मुख्यमंत्री मनोहरलाल खट्टर एवं माननीय पशुपालन एवं डेयरी विकास मंत्री ओमप्रकाश धनखड़ को इस व्यावहारिक एवं गोहितकारी कार्य के लिए बधाई एवं शुभकानाएँ प्रदान कीं।

उन्होंने हरियाणा सरकार के उस कदम को गोसंरक्षण एवं गोसंवर्धन के लिए महान् लाभकारी बताया जिसमें देशी गायों के पालने के लिए गोशाला एवं डेयरी की स्थापना पर पचास प्रतिशत सरकारी अनुदान की घोषणा की गई है। साथ ही छः लीटर दूध देने देशी गाय के लिए दस हजार रुपये का पुरस्कार पालक को दिए जाने की सराहना की। आचार्य देवव्रत ने कहा कि गुरुकुल कुरुक्षेत्र ने गोसंवर्धन के लिए गाय के जिस आर्थिक स्वरूप की स्थापना को अभियान के रूप में वर्षों से चलाया हुआ था उस पर सरकार ने सार्थक मोहर लगा दी है। गुरुकुल के माध्यम से गो एवं जनहितकारी इस अभियान को निरन्तर क्रियान्वित किया जाता रहेगा।

सच्चे हिन्दुत्व को दिखाती है... पृष्ठ 2 का शेष.....

इस फिल्म की सबसे बड़ी खूबी मुझे यह लगी कि इसने सबके पिता एक परमात्मा और विश्व-बंधुत्व की धारणा को प्रबल बनाया है और जो नकली ईश्वर मनुष्यों ने अपने स्वार्थों के लिए खड़े कर लिए हैं, उनकी पोल खोलने के लिए इस फिल्म ने एक नया रास्ता अपनाया है। यह बड़ा कठिन काम है।

पाखंड और धंधेबाजी की निंदा करना आसान है, लेकिन हंसी-हंसी में उसके धुर्रे बिखेरना अत्यंत कठिन है। इतने गंभीर प्रश्न को इतने सरल ढंग से लोगों के गले उतारना अपने आप में महान कला है। आमिर खान, अनुष्का शर्मा, तपस्वी बाबा तथा अन्य कलाकारों ने अपने अत्यंक प्रामाणिक अभिनय से इस फिल्म को इतनी रोचक बना दिया है कि मेरे जैसे लोग, जो प्राय: फिल्म नहीं देख पाते हैं, वे भी इसे देखने जाएंगे। इस फिल्म को लोकप्रिय बनाने में सबसे बड़ा योगदान तो उन बंधुओं का है, जिन्होंने यह फिल्म देखी ही नहीं, लेकिन जिनके विरोध के कारण रोज़ लाखों लोग उसे देख रहे हैं। क्या पता यह फिल्म भारत की सबसे लोकप्रिय फिल्म सिद्ध हो जाए?

ईश्वर सर्वज्ञ है और जीवात्मा... प्रथम पृष्ठ का शेष.....

ईश्वर के स्वरूप का प्रकाश इस प्रकार भी समझा जा सकता है कि जैसे कोई सच्चा गुरु अपने समस्त ज्ञान का प्रकाश अपने शिष्य पर करता है और उससे उम्मीद करता है कि वह उस ज्ञान को आगे बढ़ाये। महर्षि दयानन्द के गुरु दण्डी स्वामी विरजानन्द ने भी अपने समस्त ज्ञान का प्रकाश महर्षि दयानन्द पर किया और उनसे अनुरोध किया कि वह चाहते हैं कि दयानन्द जी उनसे प्राप्त अपने समस्त ज्ञान का प्रकाश सारे देश व विश्व की जनता को करायें। इसी प्रकार से ईश्वर सिद्ध योगी व उपासक पर अपने स्वरूप व ज्ञान का प्रकाश कर देता है। जो लोग उपासना करते हैं और उन्हें योग की सिद्धियां प्राप्त हैं, वह चाहे किसी मत के अनुयायी हों, उनका पुनीत कर्तव्य है कि वह उस ज्ञान से देश की जनता को लाभान्वित करें। यदि वह ऐसा नहीं करते तो यह उनकी स्वार्थ की प्रवृत्ति व अज्ञान ही कहा जा सकता है।

हम समझते हैं कि ईश्वर के सर्वज्ञ होने व जीव के अल्पज्ञ होने का कुछ ज्ञान पाठकों को हो गया होगा। हम अनुरोध करते हैं कि सत्यार्थ प्रकाश आदि ग्रन्थों का निरन्तर स्वाध्याय वा अध्ययन कर इस विषय व अनेक अनेक आध्यात्मिक व सामाजिक विषयों का ज्ञान प्राप्त कर पाठक अपने जीवन को सफल बनाये।

196 चुक्खूवाला-2, देहरादून-248001

विशेष सूचना

आपका शुल्क समाप्त हो गया है।

आर्य प्रतिनिधि साप्ताहिक के सदस्यों से आग्रह है कि जिस माह आपका शुल्क समाप्त हो, कृपया उसी माह में अपना नवीन पंजीकरण शुल्क भेज दें ताकि आपकी सदस्यता समाप्त न हो और आपको आर्य प्रतिनिधि साप्ताहिक पत्रिका लगातार मिलती रहे। पत्रिका का वार्षिक शुल्क 150/- रु० व आजीवन शुल्क 1500/- रु० मनीआर्डर अथवा बैंक ड्राफ्ट द्वारा सम्पादक आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा दयानन्दमठ रोहतक के पते पर भेजें। -संपादक

आवश्यक सूचना

आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा दयानन्दमठ रोहतक कार्यालय में आर्य बन्धुओं की सुविधाओं को देखते हुए सभा ने अपना निजी फेसबुक **'आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा'** व ट्वीटर अकाउंट **'आर्य प्रतिनिधि सभा'** तैयार किया है जिससे आर्य महानुभावों को भविष्य में काफी सहयोग मिलेगा।

संपर्क सूत्र :- मंजीत-मो० 9812611701 —सभामन्त्री

thearyasamaj.org

ईसाई–विद्या से अविद्या की ओर

❑ प्राचार्य अभय आर्य, रोहतक

यह तो सारे संसार में एक निर्भ्रान्त तथ्य है कि समस्त ज्ञान-विज्ञान आर्यावर्त्त से ही अन्य देशों में फैला। अंग्रेज भोजन करते समय मुख को बन्द रख के ही उसे चबाते हैं तथा इसे सज्जनता का परिचायक मानते हैं। मैने बहुत पहले अपने पूज्य पिताजी की आयुर्वेद की पुस्तकों में **'सदाचार'** विषय के अन्तर्गत पढ़ा कि भोजन को चप-चप की ध्वनि करके नहीं खाना चाहिए। प्रात: जल्दी उठने, एक पत्नीव्रत आदि जिन नियमों का पालन कर अंग्रेजों ने कभी देश-देशान्तर में बृहद् साम्राज्य खड़ा किया था, वे नियम भी तो हमारी संस्कृति की अमूल्य धरोहर है। अंग्रेजों में वस्तुओं, सहायता आदि लेकर धन्यवाद करने की जो पद्धति है वह हमारे नीतिकारों द्वारा प्रतिपादित **'कृतज्ञता'** के सिद्धान्त का अंशमात्र है। लेकिन रिश्ते-नातों का औचित्य खान-पान आदि अनेक विषय ऐसे रह गए जिनमें अंग्रेज हमारी संस्कृति की गरिमा को छूने, अपनाने में असमर्थ रहे।

वेद का ज्ञान मनुष्य मात्र के कल्याण के लिए है। **'वसुधा हमारा घर'** तथा **'सृष्टि हमारी मित्र'** इस संदेश का पालन करते हुए हमारे ऋषियों, मनीषियों, धर्मप्रचारकों, समाज सुधारकों ने विदेशों में भी वेदों के सर्वजनहिताय, सर्वजन सुखाय के संदेशों का बहुआयामी प्रचार किया। लेकिन कुछ विदेशियों का हठ-दुराग्रह कुछ हमारे प्रचार की शिथिलता तथा व्यक्तित्व में तप की कमी कि विदेशों की बात दूर हम अपने देश में इन मूल्यों को खोते चले गए।

मैक्समूलर **'भारत हमें क्या सिखा सकता है'** नामक उद्बोधन में स्पष्ट करते हैं कि ईसा से पहले ही भारत को अन्य देशों से जोड़ने का चैनल था। इस तथ्य की पुष्टि के लिए वे बाइबिल में आए अनेक शब्दों का हवाला देते हैं। वे यूरोप के विद्यार्थियों को भारत में जाकर विभिन्न प्रकार की शिक्षा लेने की सलाह देते हैं। आज दुर्भाग्य कि अपने ही देश के युवक-युवतियां ईसाई बनकर अपने ही लोगों को बाइबिल पढ़ा रहे हैं।

धन्य ऋषि दयानन्द वर्षों पहले सत्यार्थ प्रकाश का तेरहवां समुल्लास रचकर इस बुराई के निराकरण के लिए अमोघ अस्त्र हमें दे गये। किन्तु शोक उसे चलाने वाले को लोग वर्तमान में तलाशते ही रह जाते हैं। वहाँ बाइबिल में **'वेदी'** और **'होम'** के लेख से ऋषि ने सिद्ध किया है कि ये बातें वेदों से बाइबिल में गई हैं। साथ ही ऋषि ने ग्रन्थकार द्वारा इन विषयों की विकृति को भी इंगित किया है। ओनान के प्रसंग में ऋषि यहाँ स्पष्ट करते हैं, **''और वेदोक्त नियोग भी प्रथम सर्वत्र चलता था।''** जहाँ ऋषि दूर-दूर तक वेद विद्या के प्रचार-प्रसार-प्रभाव द्वारा आर्यों के चक्रवर्ती साम्राज्य की ओर इशारा करते हैं वहीं बाइबिल की निस्सारता के भी पर्याप्त उदाहरण देते हैं। वे उस प्रसंग का उल्लेख करते हैं हाँ लूत को दाख का रस पिलाया जाता है तथा उसकी दोनों बेटियां उससे गर्भिणी होती हैं। वे बाइबिल के उस प्रसंग का उल्लेख करते हैं जहाँ इसाइयों का तथाकथित ईश्वर अबिरहाम के पास पहुंचता है और मक्खन, दूध व पकाया हुआ कोमल बछड़ा परोसा जाता है। इसके अतिरिक्त पत्थर पूजने, सन्तान उत्पन्न करने, बिमारी ठीक करने जैसे करिश्मे सम्बन्धी प्रसंगों का उल्लेख करके ऋषि इस पुस्तक को मांस, मद्य, दुराचार, अंधविश्वास से युक्त सिद्ध करते हैं। इसी पुस्तक का प्रचार वेद, उपनिषद्, दर्शन को भुलाकर हमारे पढ़े-लिखे युवक व युवतियां ईसाई मिशनरियों के झांसे में आकर कर रहे हैं। ऐसी ही एक घटना भिवानी के एक गांव की वर्तमान में सामने आई है। **'ईसा ईसा बोलके'** निराकरण के लिए स्वामी श्रद्धानन्द ने जिन आर्य शिक्षणालयों की नींव रखी थी, आज न केवल उनके विस्तार अपितु समीक्षा की भी आवश्यकता है।

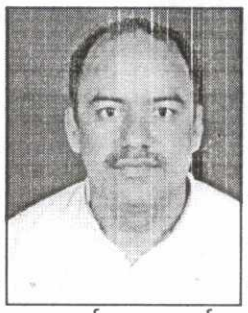

आचार्य अभय आर्य

साहित्य समाज का दर्पण होता है। आज मीडिया भी तो समाज व नेताओं की सोच के अनुरूप ही कार्य कर रहा है। स्मृति ईरानी एक ज्योतिष को हाथ दिखाती हैं, सभी चैनलों पर हल्ला मच जाता है, लेकिन उन्हीं चैनलों पर भविष्य-वक्ता अपना कार्यक्रम प्रस्तुत करते हैं। बाइबिल का पाठ प्रतिदिन दिखाया जाता है जहाँ रोगियों व पीड़ितों को प्रार्थना का झांसा दिया जाता है। साक्षी महाराज बयान देते हैं कि प्रत्येक हिन्दू 4-5 बच्चे पैदा करे, सभी चैनलों पर हल्ला मच जाता है। उधर आवैसी के राष्ट्रघाती बयानों पर 'सुदर्शन टी.वी. चैनल' संघर्ष करता है तथा अन्य चैनलों को इसके लिए प्रेरित करता है। लेकिन परिणाम कुछ नहीं निकलता। **'घर वापसी'** को चैनलों पर ऐसा मुद्दा बनाया जाता है कि आम लोगों को लगता है कि ईसाई व मुस्लिम मिशनरियां तो देश में कुछ कर ही नहीं रही, यह सारा उत्पात तो हिन्दू मिशनरियां ही कर रही हैं। इसे आत्मघाती कदम नहीं तो और क्या कहेंगे?

आर्यसमाज ने आराम परस्ती के चलते नेतृत्व स्तर पर, जमीनी स्तर पर खण्डन को त्याग-सा दिया है। खण्डन को आर्यसमाज का अधिकार समझा जाता था। यह अधिकार हमारे शास्त्रार्थ महारथियों ने बड़े त्याग, तप, बलिदान के बाद हमें दिलाया था। आज हम आर्यसमाज को ऐसी स्थिति में ले आए हैं, जहाँ प्रसारित कार्यक्रमों में या तो हम दोहरे मापदण्ड को अपनाएं या भारी विरोध व हो-हल्ला के लिए तैयार रहें। दोहरा मापदण्ड अपनाना आर्यत्व नहीं। विरोध का सामना करने के लिए प्रा० राजेन्द्र 'जिज्ञासु' जैसी श्रद्धा व आचार्य बलदेव जैसे तप की आवश्यकता है। हमें इस क्षेत्र में अपने अभिन्न मित्र आचार्य सोमदेवार्य: ऋषि उद्यान अजमेर से बड़ी आशाएं हैं। **'ब्रह्मकुमारी'** पर परोपकारिणी के जनवरी प्रथम अंक में उनकी दी समीक्षा को जरूर पढ़ें।

किराणी, कुराणी, पौराणी अपनी पुस्तकों से चिमटकर नहीं अपितु वेद से जुड़कर ही अविद्या से विद्या की ओर बढ़ सकते हैं। इसीलिए तो ऋषि दयानन्द ने संदेश दिया था—

'वेदों की ओर लौटो'।

हर्षोल्लास से मनाया लोहड़ी पर्व

कोटा, 13 जनवरी। लोहड़ी का पर्व लाता है खुशियां। इस पर्व को ऋतु परिवर्तन का पर्व भी कहते हैं। इसे पंजाबी व सिंधी समुदाय के लोग धार्मिक आस्था के साथ मनाते हैं।

पंजाबी जनसेवा समिति द्वारा रंगबाड़ी स्थित मधु स्मृति संस्थान व निराश्रित बच्चों व बालाजी इंस्टीट्यूट ऑफ एजुकेशन बीएड के शिक्षारत छात्र-छात्राओं के बीच लोहड़ी पर आयोजित कार्यक्रम को संबोधित करते हुए विचार व्यक्त किये। कार्यक्रम के अतिथि अर्जुनदेव चड्ढा, दर्शन पिपलानी, हरगोविन्द निर्भीक, श्रीमती बृजबाला निर्भीक ने लोहड़ी की अग्नि प्रज्वलित करते हुए कहा कि इस पर्व पर अग्नि की परिक्रमा करते हुए सभी को शुभकामनाएं दीं।

चड्ढा ने कहा कि जिन परिवारों में शादी व प्रथम संतान प्राप्ति की पहली लोहड़ी के अवसर पर त्यौहार जैसा माहौल होता है। अग्नि में मूंगफली, रेवड़ी, फुल्ले डाले जाते हैं तथा इसी का प्रसाद सभी को वितरित किया जाता है। इस अवसर पर पंजाबी समाज से शम्मी कपूर, सीमा पिपलानी, शक्ति कोहली आदि भी उपस्थित थे।

आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा के स्वामित्व में मुद्रक, प्रकाशक व सम्पादक **मा० रामपाल आर्य** ने आचार्य प्रिंटिंग प्रेस, दयानन्दमठ, रोहतक से मुद्रित एवं कार्यालय, सिद्धान्ती भवन, दयानन्दमठ, रोहतक-124001 से प्रकाशित। पत्र में प्रकाशित लेखसामग्री से मुद्रक, प्रकाशक, सम्पादक का सहमत होना आवश्यक नहीं।
प्रत्येक विवाद के लिए न्यायक्षेत्र रोहतक न्यायालय होगा। आपत्ति की अवधि प्रकाशन तिथि से एक माह के भीतर ही मानी जाएगी।